भाव भजन

ॐ

भाव भजन

डा. वी. के. सक्सेना
बी 1/26 सेक्टर 'के'
अलीगंज, लखनऊ

मूल्य 35/-

प्रिय बन्धु,

यह हमारे बुजुर्गों को प्रिय रहे भजनों का संग्रह है। इन भजनों को हमारे आराध्य परमपूज्य लालाजी महाराज तथा परमपूज्य चच्चाजी महाराज कभी प्रभु-प्रेम के जज्बे में स्वयं गाते थे और कभी अपने प्रियजनों से सुनते थे। उस समय के भजनों को उनके शिष्यों परमपूज्य डा. श्रीकृष्णलाल जी तथा परम पूज्य डा. श्यामलाल जी ने अपने समय में जीवंत रखा और अब ये हम सब के लिये एक श्रृंखला सी बन गई है। कुछ नये भजन जो वर्तमान में सत्संग और भण्डारे के अवसरों पर गाये जाते हैं और जिनसे प्रेम का उभार होता है, पुस्तक में और जोड़ दिये गये हैं। प्रेम भरे भजनों की यह लघु पुस्तिका प्रेमीजनों को अवश्य प्रेम से अभिभूत करेंगी।

अपने सत्संग की ही एक बेटी जो श्री गिरीश कुमार सक्सेना जी की सुपुत्री है, उसने बड़े प्रेम एवं लगन से इन भजनों को संग्रहित किया गया है, ईश्वर व बुजुर्ग उसको अपना सच्चा प्रेम प्रदान करे।

दास

डा. वी. के. सक्सेना
बी 1/26 सेक्टर 'के'
अलीगंज, लखनऊ

ॐ

विषय सूची

1.	माँ सरस्वती वन्दना	13
2.	नित्य पठनीय गीताजी के पाँच श्लोक	14
3.	भोजन मंत्र	14
4.	मङ्गल स्मरण	15
5.	मधुराष्टकम्	16
6.	रूद्राष्टकम	17
7.	गणपति वन्दना	18
8.	परमार्थ गीत	18
9.	महाराज गजानन आए	19
10.	गणपति मंगल कारी तुमका	19
11.	मात पिता गुरु प्रभु चरणों में	20
12.	मै पहले मनाऊँ गणराज	21
13.	गणपति के गुण नित गाअ	21
14.	जै जै गौरी के लाला	22
15.	चिन्ता हरो चिन्त पूर्णी	22
16.	सब देवन का ध्यान धरू मै	23
17.	चंदन है इस देश की माटी	24

18. अउम शान्ति को ध्याओ 24
19. गुरू जी का भजन 25
20. गुरू वन्दना 25
21. प्रातः कालीन वन्दना 26
22. आए द्वार हमारे गुरू जी 26
23. हे कृष्ण हे माधव हे सखेति 27
24. महक रहयो आज मइया का गजरा 27
25. सीता राम कहीये 28
26. हमें तारने को करूणा निधान 29
27. मैं तो ओढ़ चुनरियाँ 29
28. ये गोटेदार चुनरी 30
29. मइया के नौ दिन हो 30
30. गाओ रे गाओ माँ की महिमा 31
31. हे माँ मुझको देना सहारा 31
32. ओ जगदाती दर पे तेरा 32
33. मइया तो जगत की आधार 33
34. नदिया न पिये कभी अपना जल 33
35. दे दो अपनी पुजारिन को 34
36. दाल महारानी तुम चुरती कोह नाही 34
37. आजा मइया के द्वार 35
38. लाल चुनरी सितारों वाली 36
39. जग रक्षक नन्द कुमार 37
40. तुलसी महारानी नमो नमो 37
41. कन्हैया मेरी नैया लगादो पार 38
42. गंगा जी का भजन 38
43. कृष्ण का ब्याह 39
44. सत्संग की महिमा 39
45 .हमें तो लूट लिया 40

ॐ

परम संत लाला जी महाराज के प्रिय भजन

रघुपति राघव राजा राम

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम।
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम।
सीताराम सीताराम, सीताराम जय सीताराम।
सीताराम सीताराम, सीताराम जय सीताराम।। रघुपति.....

जै रघुनन्दन जै घनश्याम, जानकी वल्लभ जै सीताराम।
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान।
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान।
जै रघुनन्दन जै घनश्याम, जानकी वल्लभ जै सियाराम।। रघुपति...

भक्तन के रखवारे राम, सन्तन प्राण पियारे राम।
भक्तन के रखवारे राम, सन्तन प्राण पियारे राम।
जै रघुनन्दन जै घनश्याम, जानकी वल्लभ जै सियाराम।। रघुपति...

अवध बिहारी सीताराम, कुन्ज बिहारी राधेश्याम।
अवध बिहारी सीताराम, कुन्ज बिहारी राधेश्याम।
जै रघुनन्दन जै घनश्याम, जानकी वल्लभ जै सियाराम।। रघुपति..

घट घटवासी सीताराम, अन्तर्यामी राधेश्याम।
घट घटवासी सीताराम, अन्तर्यामी राधेश्याम।
जै रघुनन्दन जै घनश्याम, जानकी वल्लभ जै सियाराम।। रघुपति..

अलख निरंजन सीताराम, भव भय भंजन राधेश्याम।
अलख निरंजन सीताराम, भव भय भंजन राधेश्याम।
जै रघुनन्दन जै घनश्याम, जानकी वल्लभ जै सियाराम।। रघुपति...

मन में राम तन में राम, रोम रोम में राम ही राम।
मन में राम तन में राम, रोम रोम में राम ही राम।
जै रघुनन्दन जै घनश्याम, जानकी वल्लभ जै सियाराम।। रघुपति...

हृदय हमारे आओ राम, अब तो दरश दिखाओ राम।
हृदय हमारे आओ राम, अब तो दरश दिखाओ राम।
जै रघुनन्दन जै घनश्याम, जानकी वल्लभ जै सियाराम।। रघुपति...

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम।
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम।

दिल का हुजरा साफ कर

दिल का हुजरा साफ कर जाना के आने के लिये।
ख्याल गैरो का हटा उसको बिठाने के लिये।।

चश्में दिल में देख यहां जो जो तमाशे हो रहे।
दिलसिता क्या क्या है तेरे दिल को सताने के लिये।

एक दिल लाखों तमन्ना, उस पे औ ज्यादा हविस।
फिर ठिकाना है कहाँ, उसको टिकाने के लिये।।

गोस बातिन हो कुसादा, जो करे कुछ दिन अमल।
ला इलाहा अल्लाहू अकबर पे जाने के लिये।।

नकली मन्दिर मसजिदों में, जाय सद अफसोस है।
कुदरती मसजिद का साकिन दुख उठाने के लिये।।

कुदरती काबे के तू महराब में सुन गौर से।
आ रही धुर से सदा, तेरे बुलाने के लिये।।

क्यों भटकता फिर रहा, तू ए तलाशे यार में।
रास्ता साहरग में है, दिलबर पे जाने के लिये।।

मुर्शिदे कामिल से मिल, सादिक व सबूरी से तकी।
जो तुझे देगा फहम, दिलबर पे जाने के लिये।।

ये सदा तुलसी की है, आमिल अमल कर ध्यान से।
कुनकुरां में है लिखा, अल्लाहू अकबर के लिये।।

ॐ

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है।।
उठ जाग मुसाफिर भोर भई........

उठ नींद से अँखिया खोल जरा।
ओ गाफिल रब से ध्यान लगा,
यह प्रीति करन की रीति नहीं।
रब जागत है तू सोवत है।
उठ जाग मुसाफिर भोर भई........

ऐ जान भुगत करनी अपनी,
ओ पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी शीश धरी,
फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है।
उठ जाग मुसाफिर भोर भई........

जो आज करे सो अब कर ले,
जब चिड़ियन खेती चुग डाली।
फिर पछताए क्या होवत है,
उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है।

बहुत ढूंढा न पाया आसमानों में

बहुत ढूंढा न पाया आसमानों में जमीनों में।
वह निकले मेरे जुलमत खान ए दिल के मकीनों में।।

मैं तारीकी हूँ लेकिन मुझमें पोशीदा वह गौहर है।
अयां जिसकी झलक है एक फलक तेरे नगीनों में।।

तमन्ना दर्दे दिल की हो तो कर खिदमत फकीरों की।
नहीं मिलता यह गौहर बादशाहों के खजीनों में।।

मोहब्बत के लिये दिल ढूंढ कोई टूटने वाला।
यह वह मय है जिसे रखते हैं नाजुक आबदानों में।।

न ढूंढ इसे खिर्कापोशी में इरादत हो तो देख उनको,
यदै-बैजा लिये बैठे हैं जो अपने आस्तीनों में।।

खामोश ए दिल भरी महफिल में चिल्लाना नहीं अच्छा।
अदब पहला करीना है मोहब्बत के करीना में।।

बहुत ढूंढा न पाया आसमानों में जमीनों में।
वह निकले मेरे जुलमत खान ए दिल के मकीनों में।।

ॐ

साकी ने करम करके

साकी ने करम करके खोला दरे मयखाना।
रिन्दाने जहाँ दौड़ो भर-भर पियो पैमाना।।

पीना जो चाहे गर जाम मये कौसर।
पहले तो मये इश्क का पी ले यहां पैमाना।।

यह वक्त गनीमत है फिर मुफ्त न पायेगा।
पछतायेगा फिर आखिर सुन सुन यही अफसाना।।

देता है सदा धर धर यह इश्क का मतवाला।
दिल वालों जरा सुन लो आवाजे फकीराना।।

सरशार हर एक दिल है पीरों के तवर्रूक से।
देता है अजब बरकत, जलसा ये सालाना।।

या रब इन्हीं हाथों से पीते रहे मतवाले।
या रब यही साकी हो और यही पैमाना।।

साकी ने करम करके खोला दरे मयखाना।
रिन्दाने जहाँ दौड़ो भर-भर पियो पैमाना।।

ॐ

परम पूज्य चच्चाजी महाराज के प्रिय भजन

दीनन दुख हरण

दीनन दुख हरण देव सन्तन हितकारी।

अजामिल गीध व्याध, इनमें कहो कौन साध।
पंछी को पद पढ़ात, गणिका सो तारी।।
दीनन दुख हरण देव सन्तन हितकारी।

ध्रुव के सिर छत्र देत, प्रह्लाद को उबार लेत।
भक्त हेतु बांध्यो सेतु, लंकापुरी जारी।।
दीनन दुख हरण देव सन्तन हितकारी।

तंदुल देत रीझ जात, साग पात सौं अघात।
गिनत नहीं झूठे फल, खाटे खाते मीठी खारी।।
दीनन दुख हरण देव सन्तन हितकारी।

गज को जब ग्राह गस्यो, दुःशासन चीर खस्यो।
सभा बीच कृष्ण-कृष्ण द्रोपदी पुकारी।
इतने हरि आय गये, बसनन आरूढ़ भये।
सूरदास द्वारे ठाढ़ो आँधरों भिखारी।।
दीनन दुख हरण देव सन्तन हितकारी।

ॐ

एक विनती गुरुदेव गोसाईं

एक विनती गुरुदेव गोसाईं।
एक विनती गुरुदेव गोसाईं।

एक आस विश्वास भरोसो,
हरौ जीव जड़ताई।
न चाहूं मैं सुगति सम्पति कछु,
ऋद्धि सिद्धि विपुल बड़ाई।।
हेतु रहित अनुराग राम पद,
नित नित होत अधिकाई।
एक विनती गुरुदेव गोसाईं।

यहि जग में जहँ लगि
या तनु की प्रीति प्रतीति सगाई।
सबहिं सिमट एक दाईं कीजिये,
अन्त समय की नाईं।
एक विनती गुरुदेव गोसाईं।

काल करम ले जाये मो को,
खेंच खेंच बरीयाई।
दीनानाथ दयालु मोरे गुरुवर,
कीजिये क्षमा दास की नाईं।
एक विनती गुरुदेव गोसाईं।

ॐ

परम पूज्य ताऊजी महाराज के प्रिय भजन

नदिया किनारे डोला

नदिया किनारे डोला धर दे मुसाफिर।
भजन करूं मैं एक बार हो। नदिया किनारे डोला...

बालापन खेलन में गंवायो,
कबहुँ न लियो प्रभु नाम हो।
सखिया सहेली संग खेलहु न पाई
कि ले चले डोलिया कहार हो। नदिया किनारे डोला...

युवती भई रास रंग में गंवायो,
कबहुँ न लियो प्रभु नाम हो।
मेंहदी की लाली अबहि रचहु न पाई,
ले आए डोलिया कहार हो। नदिया किनारे डोला...

छुट गई ले नैहर, छुट गई ले ससुराल,
छुट गईले महल अटारि हो।
अम्मा बाबुल कोई काम न आइये,
गुरुजी लगाहिये बेड़ापार हो। नदिया किनारे डोला...

कहत कबीर सुनो भई साधो,
गुरु के चरण चित लागो।
अन्त समय कोई काम न आइये,
गुरुजी लगहिये बेड़ापार हो।। नदिया किनारे डोला...

तेरे हुस्न जैसी नकहत

तेरे हुस्न जैसी नकहत ना हुई है, ना है, ना होगी।
कहीं और ऐसी सूरत, ना हुई है, ना है, ना होगी।
तुझे दिल से चाहता हूँ, ये तुम्हीं को बस पता है।
किसी और से मोहब्बत, ना हुई है, ना है, ना होगी। तेरे हुस्न...

कोई होगा इबने मरियम, नहीं रखते कुछ खबर हम।
किसी गैर की जरूरत, ना हुई है, ना है, ना होगी। तेरे हुस्न...

तेरे दर ही मेरा किबला, मेरा सर यहीं झुकेगा।
किसी और की इबादत, ना हुई है, ना है, ना होगी। तेरे हुस्न...

तू जहाँ है वहाँ उजाला, तू नहीं तो है अन्धेरा।
तेरे कदमों जैसी बरकत, ना हुई है, ना है, ना होगी। तेरे हुस्न...

नहीं शर्त नहीं कोई मजहब, यहाँ एक रंग है सब।
कहीं और ऐसी रंगत, ना हुई है, ना है, ना होगी। तेरे हुस्न...

कहीं हमने जब पुकारा, दिया आपने सहारा।
किसी और से शफक्कत, ना हुई है, ना है, ना होगी। तेरे हुस्न..

राहे नक्शबन्द पैगम, तेरा फैज जारी हर दम।
कहीं और ऐसी हालत, ना हुई है, ना है, ना होगी। तेरे हुस्न...

खुदा तुझको रखे कायम, तेरा दर रहे सलामत।
किसी और की जरूरत, ना हुई है, ना है, ना होगी। तेरे हुस्न...

सबको गले लगाया, सन्मार्ग पर चलाया।
कहीं ऐसी रहनुमायी, ना हुई है, ना है, ना होगी। तेरे हुस्न...

ॐ

सहारा दो गुरूवर

सहारा दो गुरुवर, हमारा न कोई।
विकल हो गये जब पड़ी भीर कोई।
सहारा दो गुरुवर, हमारा न कोई।

तुम दुख द्वन्द हारी निरंजन कहाते।
हरो सबके दुख दर्द, हे दुखहारी।
सहारा दो गुरुवर, हमारा न कोई।

अगम भीषण धारा, ना कोई सहारा।
मदद कीजिये बस मदद का सहारा।।
सहारा दो गुरुवर, हमारा न कोई।

विकारों का मुझसे तो पीछा न छूटे।
हरो सब विकारों को, हे पापहारी।।
सहारा दो गुरुवर, हमारा न कोई।

हृदय को मेरे धाम अपना बना लो।
कि मिट जाय ये सारी विपदा हमारी।।
सहारा दो गुरुवर, हमारा न कोई।

ॐ

वो दिन कौन सा

वो दिन कौन सा मेरे गुरुदेव होगा।
कि चरणों में तेरे, मेरा ध्यान होगा।।
वो दिन कौन सा मेरे गुरुदेव होगा।

चरण हो तेरे और मस्तक हो मेरा।
ये दिल कब तेरे दर पे कुर्बान होगा।।
वो दिन कौन सा मेरे गुरुदेव होगा।

अगम भीषण माया ने है मुझको घेरा।
निकलना नहीं मुझको आसान होगा।
वो दिन कौन सा मेरे गुरुदेव होगा।

श्रीकृष्ण दुश्वारियाँ मेरी टारो।
तुम्हें ये काम नाथ आसान होगा।।
वो दिन कौन सा मेरे गुरुदेव होगा।

शरण में पड़ी हूँ उठाना ही होगा।
मुझे नाथ पार लगाना ही होगा।।
वो दिन कौन सा मेरे गुरुदेव होगा।

चरण हो तेरे और मस्तक हो मेरा।
ये दिल कब तेरे दर पे कुर्बान होगा।।
वो दिन कौन सा मेरे गुरुदेव होगा।

ॐ

परमपूज्य बाबूजी को समर्पित भजन

आओ श्याम...

पधारो कुटिया के मेहमान।
कैसे स्वागत करें आपका हम हैं निपट अंजान।
पधारो कुटिया के मेहमान।

मधु मेवा पकवान नहीं हैं।
स्वागत का सामान नहीं हैं।
फिर भी प्राण पुकार रहें हैं, आओ दया निधान।
पधारो कुटिया के मेहमान।

बड़े भाग्य कहते हैं किसको।
आज समझ पाये हैं हम इसको।
भक्त सुदामा के घर आओ श्रीकृष्ण भगवान।।
पधारो कुटिया के मेहमान।

हम तो नाथ तुम्हें नहीं भजते।
फिर भी आप हमें नहीं तजते।
प्रेम में बंधकर आ जाते हो।
आओ भक्तवत्सल भगवान।।
पधारो कुटिया के मेहमान।

ॐ

हे प्रेम दान दाता

हे प्रेम दान दाता तेरे भरे भण्डारे।
हे प्रेम दान दाता तेरे भरे भण्डारे।

जिस जिस को तूने बख्शा, निर्मल ये प्रेम अपना।
उसने भुलाया जग को, जग जान झूठा सपना।।
हे प्रेम दान दाता तेरे भरे भण्डारे।

क्या जाने दुनियां वाले तेरे प्रेम के नजारे।
वहीं आ गये मदद को मैं ने जिस जगह पुकारा।
रघुबर राम के दुलारे, श्री श्याम गुरुवर प्यारे।
तेरी दया से दाता सजते हैं भण्डारे।
तेरी दया से दाता भरते हैं भण्डारे।।
हे प्रेम दान दाता तेरे भरे भण्डारे।

अब आओ गुरुवर प्यारे, सबको दरश दिखाओ।
क्या जाने दुनियां वाले, तेरे प्रेम के नजारे।
वहीं आ गये मदद को मैं ने जिस जगह पुकारा।
हे प्रेम के भण्डारी सदगुरु मेरे प्यारे।
हे प्रेम दान दाता तेरे भरे भण्डारे।
तेरी दया से दाता सजते हैं भण्डारे।
तेरी दया से दाता भरते हैं भण्डारे।।

भण्डारों में गाये जाने वाले भजन

हो मुबारक उन्हें आज का दिन
जो कि भण्डारे आये हुएं है।
आज द्वारे गुरुजी के आ के, सर को झुकाये हुए हैं।
हो मुबारक उन्हें आज का दिन...

फैज से अपने फैजयाब कर दे
नूर से अपने कर दें वे रोशन।
हम दुआ के लिये हाथ अपना, उनके आगे उठाये हुए हैं।।
हो मुबारक उन्हें आज का दिन...

शर्म से सिर झुकाये हुए हैं।
फिर भी हम उनके ही रूबरू है।
माफ कर दे खताए हमारी, हम गुनहगार आये हुए है।
हो मुबारक उन्हें आज का दिन...

सबकी झोली को भर देने वाले।
मेरी झोली पर भी नजर कर दे।
जायेंगे न तेरे दर से खाली, हम भी झोली फैलायें हुए हैं।।
हो मुबारक उन्हें आज का दिन...

मेरी खुशियों का आलम न पूछो।
हो न जाऊं कहीं मैं ही पागल।
मेरे आका मेरे नाथ मुझ पे, आप ही आप छाये हुए हैं।
हो मुबारक उन्हें आज का दिन...

ॐ

गुरु पूर्णिमा का दिन..

गुरु पूर्णिमा का दिन ये बड़ा बेमिसाल है।
प्राचीन प्रथा का पर्व ये बड़ा ही विशाल है।।गुरु पूर्णिमा...

जो आज उस प्रथा को किये जा रहे हैं हम।
साकी के इशारे से पिये जा रहे हैं हम।
इस पर्व की प्रथा का यही तो कमाल है।। गुरु पूर्णिमा...

ऐसी कृपा करें कि कायम रहे सुरूर।
गफलत में ढल न जाये जिन्दगी का नूर।
बेचैन मुरीदों का यही तो सवाल है।। गुरु पूर्णिमा...

इस दिल के अन्धेरे की वजह कुछ न पूछिये।
रौशन होवे चिराग करम कुछ तो कीजिये।
तेरे सामने भी हो के हमारा ये हाल है।। गुरु पूर्णिमा...

हर सिलसिले की बरकत तेरे दर पे बरसती है।
जन्नत से नियामतें भी आने को तरसती हैं।
रूतबा हमारे पीर का कितना विशाल है।। गुरु पूर्णिमा...

हम तेरा शुक्रिया गुरुवर कैसे अदा करें।
या रब गुनाह माफ कर दे ये इल्तजा करें।
गुरू अपने मुरीदों का तुझे कुछ भी ख्याल है। गुरु पूर्णिमा...

यह नक्शबन्दियों के सिलसिले का हवाल है।
हर सिलसिले के लोग यहाँ होते निहाल हैं।
मेरे सिलसिले के पीर को हासिल कमाल है।। गुरु पूर्णिमा...

गुरुदेव का यह जन्मदिन..

गुरुदेव के जन्म का यह दिन विशाल है।
उनके ही जन्मदिन का यह उत्सव महान है।
कायस्थ कुल का भूषण सबका चिराग था।
गुलशन जिनके नूर से सारा जहान था।।

पैदाइशों से पहले किसी सन्त की दुआ।
सदा सुहागिन नाम था जिसने दी थी दुआ।
एकम जनवरी सन 1901 था।
छोटे से गांव कटिया में जन्मा ये सन्त था।

मुंशी प्यारेलाल के यह ज्येष्ठ पुत्र थे।
भाई थे तीन छोटे जो उनको अजीज थे।
पैदाइशों से पहले प्रभु का प्रसाद था।
बचपन से ही निहाल ये होनहार था।

छोटी सी उम्र चौदह में छोड़ा था घर और गांव।
आये ज्यों फतेहगढ़ में जीवन पलट गया।
मिलने को मिल गये, बली सन्त रामचन्द्र।
चरणों में उन्हीं के सब कुछ लुटा दिया।।

उस प्रेम की नजर पर कुर्बान हो गये।
उनके ही आप हो गये, उनको अपना बना लिया।
अब जिन्दगी में एक ही मकसद करार था।
पूज्य लालाजी खुश रहें, बस एक ख्याल था।।

ऐसी कृपा करें कि कायम रहे सुरूर।
गफलत में ढल ना जाये, कहीं जिन्दगी का नूर।
उनकी ही याद में गुजरा सुबह और शाम।
उनकी ही याद में ढली जिन्दगी की शाम।।

29 दिसम्बर 1987 को दुनियां से वह बली सन्त चल दिया।
सच्चाई और प्रेम का रिश्ता सिखा गया।
सीधी सरल सी राह सबको बता गया।
लग और लिपट के किसी तरह बेटों बना लो काम।
ये मन्त्र निज जनों के कानों में फूक दिया।

गुरुदेव के जन्म का यह दिन विशाल है।
उनके ही जन्मदिन का यह उत्सव महान है।
कायस्थ कुल का भूषण सबका चिराग था।
गुलशन जिनके नूर से सारा जहान था।।

ॐ

ईश्वर की याद में गाये जाने वाले भजन

हम लाये है तुफान से ....

हम लाए हैं तूफान से ये दिन निकाल के।
सत्संग को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के।
तुम ही भविष्य हो मेरे सत्संग विशाल के।
बगिया को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के।।
सत्संग को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के।

देखो कहीं बरबाद न होवे ये बगीचा।
इसको हृदय के खून से बाबूजी ने सींचा।
रखा है ये चिराग बुजुर्गों ने बाल के।
सत्संग को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के।

दुनियां के दांव पेच से रखना न वास्ता।
मंजिल तुम्हारी दूर है लम्बा है रास्ता।
भटका न दे माया तुम्हें धोखे में डाल के।
तुम हर कदम उठाना गुरु के ख्याल में।
सत्संग को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के।

आराम की भूल भुलैया में ना भूलो।
सपनों के हिंडोलो में मगन होके न झूलो।
अब वक्त आ गया है मेरे हँसते हुए फूलो।
फैला दो उनके नाम को सारे जहान में।
सत्संग को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के।

..........हम लाये है तुफान से

प्रेम करो, प्रेम सीखो, प्रेम सिखाओ।
खुद प्रेमी बनो, विश्व को प्रेमी बनाओ।
प्रेम ही ईश्वर है, विश्व में ये फैलाओ।
बाबूजी के आशीर्वाद के पात्र बन जाओ।
सत्संग को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के।

बच्चों अब वक्त वापसी का है, हिम्मत ना तोड़ना।
जीवन में अपने लक्ष्य को पूरा करके छोड़ना।
बुजुर्गों के उसुलों को कभी ना भूलना।
प्रेम ही ईश्वर है, इस बात को न भूलना।
सभी को जोड़ना, किसी को न छोड़ना।
सत्संग को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के।

राम रघुबर, श्रीकृष्ण, श्रीश्याम को कभी ना भूलना।
जीवन में आयेगा उजाला, इन सबके सहारे।
सत्संग को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के।
हम लाए हैं तूफान से ये दिन निकाल के।

ॐ

करते हो तुम गुरुवर...

करते तो तुम हो गुरुवर मेरा नाम हो रहा है।
मेरा आपकी दया से सब काम हो रहा है।

पतवार के बिना ही मेरी नाव चल रही है।
हैरान है जमाना मंजिल भी मिल रही है।
करता नहीं मैं कुछ भी सब काम चल रहा है।
करते तो तुम हो गुरुवर मेरा नाम हो रहा है।

तुम साथ हो जो मेरे किस चीज की कमी है।
किसी और चीज की अब दरकार ही नहीं है।
तूने हर कदम डगर पर मुझको दिया सहारा।
मेरी जिन्दगी बदल दी करके इक इशारा।
एहसान पर तेरा ये अहसान हो रहा है।
करते तो तुम हो गुरुवर मेरा नाम हो रहा है।

मैं तो नहीं हूं काबिल तेरा पार कैसे पाऊँ।
टूटी हुई वाणी से गुणगान कैसे गाऊँ।
तूफान आंधियों में तूने ही मुझको थामा।
तुम कृष्ण बन के आये मैं जब बना सुदामा।
तेरा हर करम ये मुझपर सरेआम हो रहा है।।
करते तो तुम हो गुरुवर मेरा नाम हो रहा है।

.......करते हो तुम गुरुवर

मैं गमों की धूप में जब तेरा नाम ले के निकला।
मिला रहमतों का साया ये करम नहीं तो क्या है।
मेरा मर्तबा बढ़ाया ये करम नहीं तो क्या है।
मुझे वक्त जिक्र करके मेरी रूह में उतर के।
मेरे दिल को दिल बनाया, ये करम नहीं तो क्या है।
मैं गिरा तो खुद उठाया ये करम नहीं है तो क्या है।
मुझे आपने सम्भाला, ये करम नहीं तो क्या है।

करते तो तुम हो गुरुवर मेरा नाम हो रहा है।
मेरा आपकी दया से सब काम हो रहा है।

ये तो प्रेम की बातें हैं ऊधो....

ये तो प्रेम की बात है ऊधो, बन्दगी तेरे बस की नहीं है।
यहाँ सर दे के होते हैं सौदे, आशिकी इतनी सस्ती नहीं है।
ये तो प्रेम की बात है ऊधो, बन्दगी तेरे बस की नहीं है।

प्रेम वालों ने कब वक्त पूछा, उनकी पूजा में सुन ले ए ऊधो।
यहाँ दम दम में होती है पूजा, सर झुकाने की फुरसत नहीं है।
ये तो प्रेम की बात है ऊधो, बन्दगी तेरे बस की नहीं है।

जो असल में हैं मस्ती में डूबे, उन्हें क्या परवाह जिन्दगी की।
जो उतरती है चढ़ती है मस्ती, वो हकीकत में मस्ती नहीं है।
ये तो प्रेम की बात है ऊधो, बन्दगी तेरे बस की नहीं है।

जिसकी नजरों में है श्याम प्यारे, वो तो रहते है जग से न्यारे।
जिसकी नजरों में मोहन समाये, वो नजर फिर तरसती नहीं है।
ये तो प्रेम की बात है ऊधो, बन्दगी तेरे बस की नहीं है।

कागा सब तन खाइयो....

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खा लेहु माँस।
दुई नैनन को छाड़ि देऊ, जिन गुरु दरश की प्यास।
कागा नयनन काढ़ि के, ले जाओ सदगुरु पास।
नयनन दरश दिखाई के, पाछे खा लेहु माँस।।

ॐ

इतना तो करना गुरुवर...

इतना तो करना गुरुवर, जब प्राण तन से निकले।
तेरा नाम मुख से निकले, तब प्राण तन से निकले।

कोई आस न हो मन में, कोई त्रास न हो तन में।
गुरुदेव की दया हो, तब प्राण तन से निकले।
इतना तो करना गुरुवर, जब प्राण तन से निकले।

रघुबर राम की रटन हो, श्री कृष्ण का मनन हो।
श्री श्याम सामने हो, बस प्राण तन से निकले।
इतना तो करना गुरुवर, जब प्राण तन से निकले।

सब धर्म कर्म बिसरे, सब जग बिसर ही जाए।
बस तू ही तू हो बाकी, जब प्राण तन से निकले।
इतना तो करना गुरुवर, जब प्राण तन से निकले।

छोटी सी आरजू है, पूरी जरूर करना।
बस तेरे ही चरण हों, जब प्राण तन से निकले।
गुरूदेव सामने हों, जब प्राण तन से निकले।
इतना तो करना गुरुवर, जब प्राण तन से निकले।

ॐ

मुझे कौन पूछता था....

मुझे कौन पूछता था तेरी बन्दगी से पहले।
दर दर भटक रही थी तेरी बन्दगी से पहले।
मैं तो खाक जैसे मिट्टी, क्या थी मेरी हस्ती।
खाती थी मैं थपेड़े, तूफान में जैसे किश्ती।
तूने थाम हाथ मेरा, किस्मत मेरी बना दी।
मुझे कौन पूछता था तेरी बन्दगी से पहले।

मैं तो सीप जैसे खाली, मिट्टी में रूल रही थी।
तूने भरकर नाम अपना, कीमत मेरी बढ़ा दी।
तुम श्याम रूप गुरुवर, बैठे थे मेरे घट में।
मुझे माफ करना गुरुवर, महिमा न जान पाई।
मुझे कौन पूछता था तेरी बन्दगी से पहले।

तुम दीनानाथ दानी, सब कुछ लुटा रहे थे।
पर मैं ही थी अभागन, झोली ही भर न पाई।
मुझे कौन पूछता था तेरी बन्दगी से पहले।

जलवा दिखा रहा है, मुझको जहूर तेरा।
पर जानती हूँ गुरुवर, ये कमाल बन्दगी है।
मुझे माफ करना गुरूवर, महिमा न जान पाई।
तूने भर के नाम अपना, कीमत मेरी बढ़ा दी।
मुझे कौन पूछता था तेरी बन्दगी से पहले।

मेरा कोई ना सहारा...

मेरा कोई ना सहारा बिन तेरे, श्री श्याम सद्‌गुरु मेरे।
मेरा कोई ना सहारा बिन तेरे, श्री श्याम सद्‌गुरु मेरे।

तुम दीनबन्धु हितकारी, आए हैं शरण तिहारी।
काटो जन्म मरण के फेरे।
मेरा कोई ना सहारा बिन तेरे, श्री श्याम सद्‌गुरु मेरे।

विषयों के जाल में फँसकर,
मोह-ममता के जाल में कसकर।
दुख पाये हैं नाथ घनेरे।
मेरा कोई ना सहारा बिन तेरे, श्री श्याम सद्‌गुरु मेरे।

आशा एक नाथ हमारी, आए हैं शरण तुम्हारी।
अब तुम्हीं हमें उबारो।
मेरा कोई ना सहारा बिन तेरे, श्री श्याम सद्‌गुरु मेरे।

ॐ

जो जिक्रे सदगुरु से

जो जिक्रे सदगुरु से दिल को बहलाया नहीं करते।
हकीकत में वह लुत्फे जिन्दगी पाया नहीं करते।
जो जिक्रे सदगुरु से दिल को बहलाया नहीं करते।

बिठाकर सामने उनको न्योछावर जान दिल कर दो।
ये मौके जिन्दगी में बार बार आया नहीं करते।

मिला किस्मत से जिनको सदगुरु का दर मेरे भाई।
कभी वह भूलकर गैरों के दर जाया नहीं करते।

भरे जिनके है दामन सदगुरु की दुआओं से।
किसी के सामने वो दामन फैलाया नहीं करते।

फिदा करते हैं दिल अपना जो अपने पीर पर हरदम।
भरी दुनियां के चेहरे फिर उन्हें भाया नहीं करते।

सरूरे दायमी हासिल है जिनको पीर से अपने।
अलावा इनके दिल अपना वह बहलाया नहीं करते।

मिले कितनी भी दौलत और शोहरत पर मेरे भाई।
इनायत पीर मुर्शिद की भुलाया वो नहीं करते।

जो जिक्रे सदगुरु से दिल को बहलाया नहीं करते।
हकीकत में वह लुत्फे जिन्दगी पाया नहीं करते।

ॐ

दया करो दीनानाथ

दया करो दीनानाथ, सदगुरु दया करो।
दया करो दीनानाथ, सदगुरु दया करो।

चारों ओर है घोर अन्धेरा, सूझत नहीं किनारा।
डगमग डगमग डोले मेरी नैया।
कोई नहीं सहारा, सदगुरू दया करो।
दया करो दीनानाथ, सदगुरु दया करो।

जीवन की सन्ध्या गहराई, कुछ नहीं पुण्य कमाई।
जिन देखूं सब दूर खड़े हैं, सब अपने दूर खड़े हैं।
गुरुवर तुम ही एक सहाई, सदगुरू दया करो।
दया करो दीनानाथ, सदगुरु दया करो।

छोड़ तुम्हारा द्वार प्रभु मैं, किसके द्वारे जाऊँ।
तुम बिन मेरा कौन है, किससे आस लगाऊँ।
दया करो दीनानाथ, सदगुरु दया करो।
दया करो दीनानाथ, सदगुरु दया करो।

रूख से पर्दा उठा

रूख से पर्दा उठा दो जरा गुरुवर।
बस अभी रंग महफिल बदल जायेगा।
जो हैं बेहोश वह होश में आयेंगे।
गिरने वाला भी शायद संभल जाएगा।
रूख से पर्दा उठा दो जरा गुरुवर।
बस अभी रंग महफिल बदल जायेगा।

अपने आने का वादा न तोड़ो कभी।
तेरे बन्दों का दम ही निकल जायेगा।
तुम तसल्ली न दो, पास बैठो जरा।
मौत का भी इरादा बदल जायेगा।
रूख से पर्दा उठा दो जरा गुरुवर।
बस अभी रंग महफिल बदल जायेगा।

पास तुमसा मसीहा जो बैठा रहे।
वक्त कुछ मेरे मरने का टल जायेगा।
फूल को इस तरह तोड़ ए बागवा।
शाख हिलने न पाये, न आवाज हो।
वरना गुलशन में न फिर अब रंग आयेगा।
दिल गर हर कली का दहल जायेगा।
रूख से पर्दा उठा दो जरा गुरुवर।
बस अभी रंग महफिल बदल जायेगा।

जगत रुठ जाये प्रभु तुम ना रूठो

जगत रूठ जाये प्रभु तुम ना रुठो,
तुम्हीं हो मेरी जिन्दगी का सहारा।
तुम्हीं ने अगर दीप की लौ बुझा दी।
तो चमकेगा कैसे यह जीवन सितारा। जगत रूठ........

चली आज भवसिन्धु को पार करने,
यह नौका तुम्हारा ही लेकर सहारा। जगत रूठ........

तुम्हीं रुठ गये अगर मेरे नाविक,
तो डूबेगी तरनी न पाकर किनारा। जगत रूठ........

बड़ी ही कठिनता से पकड़ा है प्रभु जी,
मुहब्ब्त के हाथों में दामन तुम्हारा। जगत रूठ........

छुड़ाओं इसे मत निबल जानकर मुझको,
तुम्हारा नहीं अब ये दामन हमारा। जगत रूठ........

जगत रुठ जाये प्रभु तुम ना रुठो,
तुम्हारे सिवा इस अन्धेरी डगर में,
मुझे कौन आकर के देगा सहारा। जगत रूठ........

जगत को उठाने की मैं सोचता था,
तुम्हारी भुजाओं का लेकर सहारा। जगत रूठ........

मगर तुम्ही हाथ ढीले किये हो,
जगत क्यों उठायेगा बोझ हमारा। जगत रूठ........

हृदय का सरोवर तो सूना रहेगा,
अरूण की किरण का ना पाकर सहारा।
कृपादृष्टि से यदि न तुमने निहारा। जगत रूठ........

ॐ

मेरे सदगुरु स्वामी दया कीजियेगा

मेरे सदगुरु स्वामी दया कीजियेगा।
मेरी शर्म महशर में रख लीजियेगा।

रहूँ आपकी याद में मगन और सरशार,
मुझे अपनी भक्ति का वर दीजियेगा।
मेरे सदगुरु स्वामी दया कीजियेगा।

मैं एहले भँवर में बही जा रही हूँ,
मुझे डूबने से बचा लीजियेगा।
मेरे सदगुरु स्वामी दया कीजियेगा।

ना साधन, ना संयम, ना पूजा, ना भक्ति,
हूँ जैसी भी गुरुवर निभा लीजियेगा।
मेरे सदगुरु स्वामी दया कीजियेगा।

जिस काम से नाथ हो आप राजी,
वही काम गुरुवर करा लीजियेगा।
मुझे डूबने से बचा लीजियेगा।
मेरे सदगुरु स्वामी दया कीजियेगा।
मुझे अपने चरणों में रख लाजियेगा।
मेरे सदगुरु स्वामी दया कीजियेगा।

तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया..–1

मुझे तूने गुरुवर बहुत कुछ दिया है, तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।
मुझे है सहारा तेरी बन्दगी का, है जिसपर गुजारा मेरी जिन्दगी का।
मिला मुझको जो कुछ तुम्हीं से मिला है। तेरा शुक्रिया है .....

किया कुछ ना मैं ने, शर्मशार हू मैं, तेरी रहमत का तलबगार हूं मैं।
दिया कुछ नहीं बस लिया ही लिया है। तेरा शुक्रिया है .....

मेरा ही नहीं तू सभी का दाता, तू ही सबको देता, तू ही दिलाता।
तेरा ही दिया हमने खाया पिया है। तेरा शुक्रिया है .....

मेरा भूल जाना, तेरा ना भुलाना, तेरी रहमतों का कहाँ है ठिकाना।
तेरी इस मोहब्बत ने पागल किया है। तेरा शुक्रिया है .....

न मिलती अगर मुझको सौगात तेरी,
तो क्या थी जमाने में औकात मेरी।
ये बन्दा तो तेरे सहारे जिया है। तेरा शुक्रिया है .....

तेरी बंदगी से बँधा हुआ हूँ मालिक,
तेरी ही कृपा से जिंदा हूँ मालिक।
तूने ही जीने के काबिल किया है। तेरा शुक्रिया है .....

जहाँ में नहीं कोई तुमसे दूजा,
दिल में बिठाकर करु तेरी पूजा।
गिरते हुए को सहारा दिया है। तेरा शुक्रिया है .....

नयनों में हरदम है तस्वीर तेरी,
तू ने बनाई है तकदीर मेरी।
मेरी जिन्दगी में उजाला भरा है। तेरा शुक्रिया है .....

संकट में गुरुवर को जब भी है ध्याया,
आखें खुली तो दर्श गुरु तेरा पाया।
कड़ी धूप में जैसे साया किया है। तेरा शुक्रिया है .....

तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया..-2

गुरुदेव मेरे करुं क्या मैं अर्पण,
ये जीवन ही मेरा तुझको है समर्पण।
तूने ही बिन्दु को सिन्धु किया है। तेरा शुक्रिया है .....

मुझे तूने गुरुवर बहुत कुछ दिया है,
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।

ॐ

पार भव से उतर जाएगा

पार भव से उतर जाएगा।
श्याम कहने से तर जाएगा।
बड़ी मुश्किल से नर तन मिला।
अब न जाने किधर जायेगा।
श्याम कहने से तर जाएगा।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े। काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोबिन्द दियो लखाय।

चाह गई चिन्ता गई, मनवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिये, सो शाहों का शाह।।

झोली फैला उसी के सामने।
वो तो दाता है भर जायेगा।
होगी घर घर में चर्चा तेरी।
कर्म ऐसे से तू तर जायेगा।

पार भव से उतर जाएगा।
श्याम कहने से तर जाएगा।

ॐ

साये में तुम्हारे हैं...

साये में तुम्हारे हैं, किस्मत ये हमारी है।
तुम हम पर करम कर दो, ये अरज हमारी है।।
साये में तुम्हारे है........

क्या पेश करुं गुरुवर क्या चीज हमारी है।
ये दिल भी तुम्हारा है, ये जां भी तुम्हारी है।।
साये में तुम्हारे है........

कुर्बान दिलो जां है, क्या शान तुम्हारी है।
नक्शा बड़ा दिलकश है, सूरत बड़ी प्यारी है।।
जिसने भी तुम्हें देखा सौ जान से वारी है।
साये में तुम्हारे है....

तुमने तो हजारों की तकदीर संवारी है।
एक बार जरा कह दो, अब तेरी भी बारी है।
साये में तुम्हारे है........

फिरदौस तस्सवुर में, तसवीर तेरी रखकर।
सौ आइने तोड़े हैं, तब जा के उतारी है।।
साये में तुम्हारे है........

क्या हाल कहूं तुमसे, क्या अर्ज करूं तुमसे।
सब आपको है रोशन, हालत जो हमारी है।।
साये में तुम्हारे है........

ॐ

हमसे अधम आधीन जो तारे न जायेंगे

हमसे अधम आधीन जो तारे न जायेंगे।
तो दीनबन्धु आप पुकारे न जायेंगे।

हम बिक चुके हैं और खरीदा है आपने।
अब ये गुलाम और के द्वारे न जायेंगे।
हमसे अधम आधीन ....

धरती का भार आपने सौ बार उतारा।
क्या मेरे पाप भार उतारे ने जायेंगे।।
हमसे अधम आधीन ....

खामोश हो रहेगें अगर आप ये कह दें।
तुझसे पतित तो अब तारे ना जाएगें।
हमसे अधम आधीन ....

हम बिक चुके हैं और खरीदा है आपने।
अब ये गुलाम और के द्वारे न जायेंगे।।
हमसे अधम आधीन ....

गुरुदेव चरण आपके सकून न पायेंगे।
नैनों के नीर से गर पखारे न जायेंगे।
हमसे अधम आधीन ....

हमसे अधम आधीन जो तारे न जायेंगे।
तो दीनबन्धु आप पुकारे न जायेंगे।

ॐ

तेरा नाम खालिके दो जहाँ

तेरा नाम खालिके दो जहाँ, तू खुदाये अर्शे मुकाम है।
तेरी बंदगी में ये सिर झुके, तुझे लाख लाख सलाम है।।
तेरा नाम खालिके दो जहाँ, तू खुदाये अर्शे मुकाम है।

तू ही हरम है तू ही बुतकुदा, नहीं फर्क दोनों में कुछ जरा।
वहां पर्दे में है निहां खुदा, यहां जलवागर बस राम है।।
तेरी बंदगी में ये सिर झुके, तुझे लाख लाख सलाम है।

तेरी याद कैसे भुलाऊ मैं, तुझे छोड़ के कहां जाऊ मैं।
तेरी याद दिल में है खुदा, तो जुबान पे तेरा ही नाम है।।
तेरी बंदगी में ये सिर झुके, तुझे लाख लाख सलाम है।

मुझे देख लुत्फे करम से तू, यही एक मेरी है आरजू।
यही सुनकर दर पे आया मैं, तेरा फैज खल्के आम है।।
तेरी बंदगी में ये सिर झुके, तुझे लाख लाख सलाम है।

नहीं हमदम अच्छी है गफलतें, कि उम्र मेरी ढल चुकी।
अब तो गुरुवर रहम करो, कि दुआ का वक्त है शाम है।।
तेरी बंदगी में ये सिर झुके, तुझे लाख लाख सलाम है।
तेरा नाम खालिके दो जहाँ, तू खुदाये अर्शे मुकाम है।

ॐ

बता दो सदगुरु अपनी डगरिया

बता दो सदगुरू अपनी डगरिया आरजू मेरी।
मैं देखूं आँख से तेरी नगरिया आरजू मेरी।।

मैं पहुंचू जब तेरे दर पर मुझे माफ कर देना।
गुनाहों में कटी सारी उमरिया नाथ ये मेरी।
बता दो सदगुरू अपनी डगरिया.....

जलूं जिस रोज मैं महसर में, मेरे गुरुवर तुम आ जाना।
तेरी रहमत की छा जाये बदरिया आरजू मेरी।
बता दो सदगुरू अपनी डगरिया.....

हे जगनायक! विश्व विनायक.....

हे जगनायक! विश्व विनायक, हे जगजीवन के जन हे।
हे दुखभंजन जन मन रंजन जय जय आनन्द के घन हे।
हे जगनायक! विश्व विनायक...

गुरु पितु माता सब जग त्राता, मनुज रूप नागर हे।
हे श्री राम रघुबर जय हे, जय श्री कृष्ण जय श्री श्याम हे।
हे जगनायक! विश्व विनायक....

ॐ

बंदो की नजर में गुरुद्वारा

बंदों की नजर में गुरुद्वारा काबे से भी बढ़कर होता है।
गुरुवर की गली का हर फेरा एक हज के बराबर होता है।
गुरुवर की गली का हर फेरा.......

जिस दर से निस्बत है जिसकी वो दर ही खुदा का होता है।
बन्दों की नजर में पीर का घर ईमान से बढ़कर होता है।
गुरुवर की गली का हर फेरा.....

जितनी भी कोशिश करें इन्सान, होता है वही जो वो चाहे।
कुर्बान दिलो ओ जां कर दो, रहमत का नजारा होता है।
गुरुवर की गली का हर फेरा....

आता है तूफां, आने दो, धरती का खुदा खुद हाफिज है।
अल्लाह भी वो मल्लाह भी वो, हँसता हुआ साहिल आता है।
गुरुवर की गली का हर फेरा......

बंदों की नजर में गुरुद्वारा काबे से भी बढ़कर होता है।
गुरुवर की गली का हर फेरा एक हज के बराबर होता है।

मोहे सोवत श्याम जगाय गयो

मोहे सोवत श्याम जगाय गयो।
सपने में दरश दिखाय गयो।
मुख मोड़ मोड़ मुस्काय गयो।
कुछ नयन से नैन चलाय गयो। मोहे सोवत श्याम जगाय गयो।

छवि देखि पिया की मैं दंग रही।
सखि मन ही मन में उमंग रही।
न उमंग रही न तरंग रही।
वह तो रोम रोम में समाय रहयो। मोहे सोवत श्याम जगाय गयो।

दई मार गई मोरि नींद उचटि।
फिर पाय पिया को न अपने निकट।
घबरा के देखन लगी इत उत।
कित जाने वो राम बिलाय गयो। मोहे सोवत श्याम जगाय गयो।

अब आवत नींद न जात पिया।
सखि कैसे मिले देखन को पिया।
चलो डूब मरें गहरी नदिया।क
यही राह मिलन की बताय गयो। मोहे सोवत श्याम जगाय गयो।

यूँ रोये ये कुछ होत कहां।
मिट जाय दुई तो मिटे झगड़ा।
उसे ढूढत है तू इत उत क्या।
वह तोही में तो समाय गयो। मोहे सोवत श्याम जगाय गयो।
सपने में दरश दिखाय गयो। मुख मोड़ मोड़ मुस्काय गयो।

ॐ

राम रघुबर कृष्ण श्याम गाते चलो

राम रघुबर कृष्ण श्याम गाते चलो।
मन के विषयों को विष से हटाते चलो।

देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगे।
इनको संयम के दिन रात कोड़े लगे।
अपने रथ को सुमार्ग पर चलते रहो।
राम रघुबर कृष्ण श्याम गाते चलो।

काम करते रहो नाम जपते रहो।
श्याम प्यारे का तुम ध्यान धरते रहो।
पाप की वासनायें मिटाते रहो।
राम रघुबर कृष्ण श्याम गाते चलो।

याद आयेगी उनको कभी न कभी।
यह विश्वास मन में जमाते रहो।
राम रघुबर कृष्ण श्याम गाते चलो।

दुख में तड़पों नहीं सुख में भूलो नहीं।
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो।
राम रघुबर कृष्ण श्याम गाते चलो।

नाम जप जप के भक्तों ने पाई गति।
दास सारे उन्हीं से करे विनती।
श्याम प्यारे को मन में रिझाते चलो।
राम रघुबर कृष्ण श्याम गाते चलो।

ॐ

झीनी रे झीनी.....

चदरिया झीनी रे झीनी, राम नाम रस भीनी।
चदरिया झीनी रे झीनी।

अष्ट कमल का चरखा बनाया, पांच तत्व की पूनी।
नौ दस मास बुनन में लागे, मूरख मैली कीन्ही।
चदरिया झीनी रे झीनी

जब मोरी चादर बुनकर आयी, रंगरेज को दीन्ही।
ऐसा रंग रंगा रंगरेजवा, लालो लाल कर दीन्ही।
चदरिया झीनी रे झीनी

चादर ओढ़ शंका मत करियो, ये दो दिन तुमको दीन्हीं।
मूरख लोग भेद नहीं जानत, दिन दिन मैली कीन्हीं।
चदरिया झीनी रे झीनी

ये चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, सब ही मैली कीन्ही।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीन्ही।
चदरिया झीनी रे झीनी

ॐ

रघुबर तुम्हरो एक सहारो

रघुबर तुम्हरो एक सहारो।
हौ पापी सबहीं ते बढ़कर किंकर नाथ तिहारो।
रघुबर तुम्हरो एक सहारो।

शरण गहे की लज्जा राखो अब मोहि नाथ उबारो।
रघुबर तुम्हरो एक सहारो।

राग द्वेष सब ही मोहिं उपजत, काम क्रोध अति भारो।
दीन दयालु दया अपनी ते संकट को अब टारो।
रघुबर तुम्हरो एक सहारो।

माया जाल में फँसकर निशदिन दीन्हा तुम्हें बिसारो।
दुख भंजन दुख हरण शरण हों तुम न मोहि बिसारो।।
रघुबर तुम्हरो एक सहारो।

नख शिख भरी वासना 'हरि' के, केवल एक सहारो।
बिन भक्ति बिन ज्ञान ध्यान, इस पापी को अब तारो।।
रघुबर तुम्हरो एक सहारो।

ॐ

राम नाम के हीरे मोती..

राम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊं गली गली।
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊं गली गली।

भोगो के मतवालो सुनलो, एक दिन ऐसा आयेगा।
धन दौलत और माल खजाना, पड़ा यहीं रह जायेगा।
कंचन काया माटी होगी, चर्चा होगी गली गली। राम नाम के...

जिनको माने सगा सम्बन्धी, एकदिन तुझे भुलायेंगे।
उस वक्त तुम्हारे गुरुवर, मारग तुम्हें दिखायेंगे।
जगत मुसाफिर खाना है, एक दिन होगी चलाचली। राम नाम के...

ऐसा फिर आजाद समय तू कभी न बन्दे पायेगा।
समय निकल जायेगा बन्दे, हाथ कुछु नहीं आयेगा।
सिर धुन धुन पछतायेगा बस आसूं होंगे ढलाढली। राम नाम के...

श्याम गुरु जो प्रकट हुए, दसों दिशा उजियारा है।
आकर देखो संत शरण में, खुला हुआ गुरुद्वारा है।
गुरु चरणों का एक सहारा, लख चौरासी टलाटली। राम नाम के...

राम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊं गली गली।
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊं गली गली।

ॐ

गुरु पइयां लागू....

गुरु पइयां लागू, गुरु पइयां मैं लागू।
गुरु चरणों में लागू, गुरु पइयां मैं लागू।
लखाय दीजो राम, गुरु पइयां मैं लागू।

जनम जनम का सोया मनुवा,
शब्दन मार जगाय दीजो रे,
गुरु पइयां मैं लागू।

अपने दास की अरज गोसाईं
अब की पार लगाये दीजो रे
गुरु पइयां मैं लागू।

तमन्नाए आगोश गर गुरु चाहता है

तमन्नाए आगोश गर गुरु चाहता है,
गरीब अपनी हस्ती मिटाए चला जा।

बिठा ले तू उनको दिलोजान में अपने,
तू खुद को उन्हीं में समाए चला जा।
गरीब अपनी हस्ती मिटाए चला जा।

खुदी को मिटा ले मेरे प्यारे बन्दो,
खुदा को ही दिल में बसाए चला जा।
गरीब अपनी हस्ती मिटाए चला जा।

ॐ

पल पल जलता है शमशान

पल पल जलता है शमशान, पल पल जलता है शमशान।
हँस हँस जलती रोज चितायें, हरा भरा संसार जलायें।
मिटती कितनों की आशायें, घर होते सुनशान। पल पल जलता...

राजा और भिखारी मिलकर, राख हुए दोनों जल जलकर।
मौन हड्डियां कहती हँसंकर, सब हैं एक समान। पल पल जलता...

इन अंगारों की शैया पर, सोया कोई पांव फैलाकर।
क्या पूछेगा इसे जगाकर, दो दिन का मेहमान। पल पल जलता...

टूट गई पापों की माला, लाखों बुझ गई जीवन ज्वाला।
फिर भी लेकर खाली प्याला, मौत मांगती दान। पल पल जलता...

हाय बाप बेटे को लाया, माँ ने अपना लाल गंवाया।
दुलहिन ने वर जलता पाया, है ये नींद महान। पल पल जलता...

यह सुन्दर बाला जो आयी, पहली रात देख न पाई।
प्रीतम से हो गई जुदाई, मौत बड़ी बलवान। पल पल जलता...

बच्चों किसको देखने आये, क्यों तुम सब के मुख कुम्हलाये।
रोये पर कुछ कह न पाये, आखिर ये नादान। पल पल जलता...

कैसी ये सूरत है भोली, जली किसकी जीवन होली।
रो रो कर बुढ़िया यूँ बोली, रूठ गये भगवान। पल पल जलता...

अग्नि वायु मिट्टी पानी, और आकाश से बनता प्राणी।
उसकी काया का है ज्ञानी, अन्तिम यह स्थान। पल पल जलता...

ॐ

ऐसौ को उदार जग माही

ऐसौ को उदार जग माही।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं।

जो गति जोग विराग जतन करि, नहीं पावत मुनि ज्ञानी।
सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी।।
ऐसौ को उदार जग माही।

जो सम्पति दसशीश अरप करि, रावन शिव पहँ लीन्ही।
सो सम्पदा विभीषण कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्ही।
ऐसौ को उदार जग माही।

तुलसीदास सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तौ भजु राम काम सब पूरन करे कृपानिधि तेरो।।
ऐसौ को उदार जग माही।

ऐसौ को उदार जग माही।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं।

ॐ

परम गुरु राम मिलावन हार

परम गुरु राम मिलावन हार।
परम गुरु राम मिलावन हार।

अति उदार मंजुल मंगल हो
अभिमत फल दाता।
परम गुरु राम मिलावन हार।

टूटी फूटी नाव हमारी, भीषण भव मझधार।
जयति जयति जय देव दयानिधि
बेगि उतारहु पार।
परम गुरु राम मिलावन हार।

दीनानाथ दयालु मोरे भगवन
सुन लेहु करूण पुकार।
परम गुरु राम मिलावन हार।

दीनानाथ दयालु मोरे भगवन
अब तो गहि लेहु उबार।
परम गुरु राम मिलावन हार।
परम गुरु राम मिलावन हार।

कलेजे में चलाने को...

कलेजे में चलाने को हमारे तीर बन जाओ।
मरीजे इयक की पूरी दवा अक्सीर बन जाओ।।
कलेजे में चलाने को......

तुम्हारे नूर का चश्मा अगर पहुंचेगा चश्मों में,
हृदय में रोशनी होगी कि पुर तासीर बन जाओ।
कलेजे में चलाने को......

तुम्हारे हाथ में ऐसा सितम जादू का देखा है।
चलाते क्यों नहीं खंजर, दिली शमशीर बन जाओ।
कलेजे में चलाने को......

चढ़ाते थे अभी तक गुल जो कबरों व मजारों पर,
चढ़ाने के लिये मेरे कबीर व पीर बन जाओ।
कलेजे में चलाने को......

किया कुरबान दिल अपना तुम्हारी शक्ल के ऊपर,
कलेजे में लगाने के लिये तसवीर बन जाओ।
कलेजे में चलाने को......

भरोसा था इलाही का, भरोसा हो गया तेरा,
इलाही से मिलाने की कोई तदबीर बन जाओ।
कलेजे में चलाने को......

यह ख्वाहिश है दीवाने की, मिले महबूब से जाकर,
मिलाने के लिये इसको तुम्ही तकदीर बन जाओ।
कलेजे में चलाने को......

ॐ

मुझे रास आ गया..

मुझे रास आ गया है, तेरे दर पे सर झुकाना।
तुझे मिल गया पुजारी, मुझे मिल गया ठिकाना।।
मुझे रास आ गया है, तेरे दर पे सर झुकाना।

कुछ गम नहीं है मुझको, चाहे जाये बदल जमाना।
मेरी जिन्दगी के मालिक कहीं तुम बदल न जाना।।
मुझे रास आ गया है, तेरे दर पे सर झुकाना।

मुझे कौन जानता था तेरी बन्दगी से पहले।
तेरी बन्दगी ने कर दी मेरी जिन्दगी फसाना।
मुझे रास आ गया है, तेरे दर पे सर झुकाना।

ये मेरी आरजू है कि दम निकले तेरे दर पर।
अभी सांस चल रही है, कहीं तुम चले न जाना।।
मुझे रास आ गया है, तेरे दर पे सर झुकाना।

यह सर वह सर नहीं है जिसे रख दूं फिर उठा लूँ।
जो सर झुक गया है मेरा, मुश्किल है अब उठाना।।

मुझे रास आ गया है, तेरे दर पे सर झुकाना।
तुझे मिल गया पुजारी, मुझे मिल गया ठिकाना।।

ॐ

निगाहों में तू, ख्यालों में तू–1

निगाहों में जब तू, ख्यालों में जब तू,
ये जन्नत नहीं तो फिर और क्या है।
दिखाकर जल्वा मेरे दिल को लूटा,
ये मोहब्बत नहीं तो और फिर क्या है। ये जन्नत नहीं तो...

मेरे दिल को जो दर्द तुमने दिया है,
मगर पार करने का वादा किया है।
समाये हुए हैं तसव्वुर में मरे,
यह वहदत नहीं है तो फिर और क्या है। ये जन्नत नहीं तो...

यह माना कि मेरी जरूरत नहीं है,
यह माना कि मेरी मोहब्बत नहीं है,
मगर नेक नजरों से दिल छीन लेना,
ये चाहत नहीं तो फिर और क्या है। ये जन्नत नहीं तो...

मेरे दम पे बिजली गिराई है तूने,
मेरी सारी बिगड़ी बनाई है तूने,
हकीकत में ये मेहरबानी है तुम्हारी,
इनायत नहीं ये तो फिर और क्या है। ये जन्नत नहीं तो...

ये सच है मैं ने करी कुछ न खिदमत,
मगर फिर भी मुझ पर हुई तेरी रहमत।

निगाहों में तू, ख्यालों में तू-2

मुर्शिद मेरे मेहरबानी तुम्हारी,
नियामत नहीं है तो फिर और क्या है। ये जन्नत नहीं तो...

ये जीवन की ज्योति जलाई है तू ने,
मेरी जिन्दगी जगमगाई है तुमने।
तेरे इश्क में मेरे दिल का तड़पना,
ये इबादत नहीं तो फिर और क्या है। ये जन्नत नहीं तो...

मेरे आंसुओं की तरफ जरा देखो,
अपनी मेहरबानी की नजरें न रोको।
खिलाया है आपने जो दामन मेरा,
ये उल्फत नहीं है तो फिर और क्या है। ये जन्नत नहीं तो...

नगाहों में जब तू, ख्यालों में जब तू,
ये जन्नत नहीं तो फिर और क्या है।
दिखाकर जल्वा मेरे दिल को लूटा,
ये मोहब्बत नहीं तो और फिर क्या है। ये जन्नत नहीं तो...

मैं क्या करुं बयान

मैं क्या करुं बयान श्री गुरु कमाल के।
दुनियां ही खुद करेगी बयान बेमिसाल के।। मैं क्या करुं बयान....

आते ही उनकी याद सभी जन समूह के।
आँखों में अश्क, आह निकली है रूह से।
ले लेने को चरण धूल, तड़प जाती हैं बाहें।
मजलूम दर्द दिल से निकल जाती है आंहे।
बीते दिनों की याद वो जलवे कमाल के।।मैं क्या करुं बयान ....

एक बार भी जिसने किया दीदार आपका।
बस वो तो हुआ ता उम्र तलबगार आपका।
भूले से न भूलेगा ये उपकार आपका।
सबको लगाया पार भव से निकाल के।। मैं क्या करुं बयान ....

भटके हुए को राह दिखाया बेगरज।
जन जन को बढ़के सीने से लगाया बेगरज।
पतितों को पतित पावन बनाया बेगरज।
दौलतें दो जहान की लुटाया बेगरज।
सबको बना के अपना रखा सम्भाल के। मैं क्या करुं बयान ....

इतनी है गुजारिश न गुरुदेव भुलाना।
रिश्ता जन्म जन्म का जन्म जन्म निभाना।
भटकाये जो संसार तो झट आके बचाना।
छूटे न कभी आपके दरबार का आना।
भण्डारे आपके गुरु हर एक साल के। मैं क्या करुं बयान ....
मैं क्या करुं बयान श्री गुरु कमाल के।
दुनियां ही खुद करेगी बयान बेमिसाल के।।

ॐ

गुरू देव तुम्हारे चरणों में,
हम सर को झुकाया करते हैं।

देखी दुनियाँ की प्रीति को बस,
नजरों का इक धोखा है।
मुंह मोड़ लिया इस दुनियाँ से,
अब तुम को रिझाया करते हैं।
गुरू देव तुम्हारे चरणों में
हम सर को झुकाया करते हैं।

तुम आन बसो इन आँखों में,
मेरी यादों में मेरी स्वासों में,
इस दिल के आंगन में दीपक,
अब रोज चलाया करते हैं।
गुरू देव तुम्हारे चरणों में,
हम सर को झुकाया करते हैं।

आने से तुम्हारे जीवन में,
आ गई बहारें आनन्द की।
गुरु कृपा की छाया में अब,
जीवन को बिताया करते हैं।
गुरू देव तुम्हारे चरणों में,
हम सर को झुकाया करते हैं।